04-07-18 की मुरली से प्रश्नोत्तरी

प्रश्न 1- कौन-सी दुनिया व शरीर से मुक्त होना है?
उत्तर - छी-छी दुनिया, छी-छी शरीर से मुक्त होना है।

प्रश्न 2- कौन सी आदत को मिटाना है।
उत्तर - झूठ बोलने की।

प्रश्न 3- मीठे बच्चे - अभी तुम्हें क्या बनना है?
उत्तर - पवित्र जीवात्मा बनना है।

प्रश्न 4- इस समय कोई भी क्या नहीं हैं?
उत्तर - पवित्र जीवात्मा

प्रश्न 5- इस समय अपने को महात्मा भी क्यों नहीं कहला सकते।
उत्तर - क्योंकि कोई भी पवित्र नहीं है।

प्रश्न 6- सतयुगी राजाई का इनाम किन बच्चों को प्राप्त होता है?
उत्तर - जो श्रीमत पर याद की रेस में नम्बरवन जाते हैं, उन्हें ही राजाई का इनाम मिलता है।

प्रश्न 7- रजिस्टर में नाम कब अच्छा होगा और इनाम के अधिकारी कब बनेंगे?
उत्तर - तीखी रेस होगी तो ...।

प्रश्न 8- तुम बच्चे बड़ी दूर की रेस कैसे करते हो?
उत्तर - दूरादेशी बन, एक सेकेण्ड में निशान तक (परमधाम तक) पहुँच वापस लौटकर आते हो।

👉 तुम्हारी बुद्धि में है पहले हम मुक्ति में जायेंगे फिर जीवनमुक्ति में आयेंगे।

💪 तुम्हारे जैसी रेस और कोई कर नहीं सकता।

प्रश्न 9- बच्चे जानते हैं आखिर कौन सा दिन आया आज?
उत्तर - जो हम बाप के सम्मुख हुए हैं।

प्रश्न 10- शरीर क्या नहीं कहेगा?
उत्तर - मेरी यह आत्मा है।

प्रश्न 11- बच्चे घड़ी-घड़ी क्या भूल जाते हैं?
उत्तर - हम आत्मा हैं, परमपिता परमात्मा के सम्मुख हैं - यह भूल जाते हैं।

प्रश्न 12- कौन सी आत्मायें, आत्माओं को पवित्र बनाने नहीं आती?
उत्तर - जीव आत्मायें।

प्रश्न 13- किसको जीव आत्मा नहीं कहेंगे और क्यों?
उत्तर - परमपिता परमात्मा को, क्योंकि उनको कोई स्थूल-सूक्ष्म शरीर नहीं है।

प्रश्न 14- यहाँ कोई ..... पावन हो न सके।

उत्तर - सुप्रीम

प्रश्न 15- पतित जीव आत्मा औरों को क्या बनायेंगी?
उत्तर - पतित ही बनायेंगी।

प्रश्न 16- यह कौन सी दुनिया है?
उत्तर - पाप जीव आत्माओं की।

प्रश्न 17- सन्यासी क्या पुरुषार्थ करते हैं।
उत्तर - पवित्र रहने का।

प्रश्न 18- अभी कौन सी भक्ति का अन्त होना है?
उत्तर - व्यभिचारी भक्ति का।

प्रश्न 19- दूरादेशी बुद्धि को क्या कहा जाता है?
उत्तर - त्रिकालदर्शी।

प्रश्न 20- तुम्हारी बुद्धि कहाँ से कहाँ तक कैसे जाती है?
उत्तर - आदि से अन्त तक, नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार।

प्रश्न 21- कौन सी रेस कभी सुनी नहीं होगी?
उत्तर - आत्माओं की रेस कभी सुनी नहीं होगी।

प्रश्न 22- हम असुल में कहां के निवासी हैं?
उत्तर - परमधाम के।

तुम सबको कहते हो मनमनाभव, बुद्धि का योग अपने बाप और परमधाम से रखो, जहाँ तुम अशरीरी रहते हो। यह सिर्फ तुम्हारी बुद्धि में ही यथार्थ रीति है

प्रश्न 23- आत्मा झूठी बनने से क्या होता है?
उत्तर - काया भी झूठी बन जाती है।

प्रश्न 24- काया को कहां पर बिठाते हैं?
उत्तर - काई पर।

प्रश्न 25- कन्या की पूजा कब होती है?
उत्तर - जब तक विकार में नहीं गई है तो पूजी जाती है।

प्रश्न 26- तुम बच्चे अपने धर्म को भूलने से क्या बन गए हो?
उत्तर - धर्म भ्रष्ट, कर्म भ्रष्ट बन पड़े हो।

प्रश्न 27- तकदीर को लकीर कैसे लग जाती है?
उत्तर - श्रीमत का उल्लंघन करने से।

प्रश्न 28- माया किन बच्चों को थप्पड़ लगा देती है?
उत्तर - अच्छे-अच्छे रूसतम बच्चों को।

वरदान - सर्व फरियादों के फाइल को समाप्त कर फाइन बनने वाले कर्मयोगी भव

Ex.
जैसे आत्मा और शरीर कम्बाइन्ड है तो जीवन है, ऐसे कर्म और योग कम्बाइन्ड हो।

2-3 घण्टा योग लगाने वाले योगी नहीं, लेकिन योगी जीवन वाले।

उनका योग स्वत: और सहज होता है, उनका योग टूटता ही नहीं जो मेहनत करनी पड़े।

उन्हें कोई भी फरियाद करने की आवश्यकता नहीं।

याद में रहने से सब कार्य स्वत: सफल हो जाते हैं।

फाइन बनने वाले के सब फाइल खत्म हो जाते हैं, क्योंकि योगी जीवन सर्व प्राप्तियों की जीवन है।

स्लोगन - हर समय करावनहार बाप याद रहे तो निरन्तर योगी बन जायेंगे।

ओम शान्ति